INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(1): 121-122
Received: 28-02-2023
Accepted: 30-03-2023

डॉ. प्रतिभा किरण
अतिथि शिक्षका, प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्त्व, एवं संस्कृति विभाग, ला. ना., मि. वि., कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रतिभा किरण
अतिथि शिक्षका, प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्त्व, एवं संस्कृति विभाग, ला. ना., मि. वि., कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

मगध से प्राप्त अभिलेखः एक पुरातात्त्विक श्रोत

डॉ. प्रतिभा किरण

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही बिहार, मगध के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में जिस 16 महाजनपदों का उल्लेख है, उसमें सर्वाधिक शक्ति–सम्पन्न राज्य के रूप में उभरने वाला मगध ही था। मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। इससे सूचित होता है कि उत्तर वैदिक काल तक मगध आर्य सम्यता के प्रभाव क्षेत्र से बाहर था। 'अभिधान चिन्तामणि' के अनुसार मगध को कीकट कहा गया है। मगध बुद्धकालीन समय में एक शक्शिाली राजतन्त्रों में से एक था। मगध महाजनपद की सीमा उत्तर में गंगा से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक, पूर्व में चम्पा से, पश्चिम मे सोननदी है विस्तृत थी। इसकी राजधानी गिरब्रिज थी।

उपरोक्त जानकारी के लिए साहित्यिक स्त्रोत प्रमाण के रूप में उपलब्ध है। जिस प्रकार इतिहास को जानने के लिए साहित्य मददगार होते हैं, उसी प्रकार पुरातात्त्विक श्रोत अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं। भारत में ही नहीं अपितु भारत के बाहर भी विविध अभिलेख, सिक्के, मृदभाण्ड, भवनों के अवशेष आदि की प्रप्ति हुई है जो इतिहास निर्माण में सहायक होते हैं। पुरातात्तिवक उत्खनन तथा अनुसंधान के कारण इन साक्ष्यों के माध्यम से प्राचीन मगध का राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक स्थिति स्पष्ट होती है।

मगध के मिथिला क्षेत्र के कई स्थलों के उत्खननों से अनेक पुरातात्तिवक सामग्रीयाँ उपलब्ध हुई हैं। 1912–13 ई. में स्पूनर के द्वारा वैशाली नगर का उत्खनन कराया गया। इस क्रम में वैशाली से कई सांस्कृतिक स्तरों का पता चला। यह स्तर मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल था बना हुआ था।

इस उत्खनन कार्य के दौरान जो सामग्रीयाँ प्राप्त हुई उनमें प्रमुख 235 पकी हुई मिट्टी की मुहरें हैं। इन मुहरों पर भिन्न–भिन्न चिन्ह अंकित थे। एक अन्य मुहर पर "भागवत आदित्य" लेख अंकित है। कनिंघम महोदय को यहाँ के उत्खन्न के समय गुप्त ब्राम्ही लिपि में 'श्री विदासत्स्य' लेख एक दावात के उपर अंकित मिला।

जयमंगलागढ़ (बेगुसराय) तथा नौलागढ़ से भी कई अभिलेख प्राप्त किये गये हैं। यह एक पुरातात्त्विक स्थल है। नौलागढ़ से अधिक संख्या में अभिलेखों की प्राप्ति हुई है। 1951 ई. में यहाँ से काले प्रस्तर निर्मित बुद्ध की प्रतिमा मिलि थी जिसपर दो पंक्तियों का लेख उत्कीर्ण है। इस लेख के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि यह अभिलेख विग्रहपाल तृतीय के 24 वें राजत्वकाल का है। एक अशोक नामक महिला का इसमें उल्लेख है जो धम्मजी नामक व्यक्ति की पत्नी तथा कृमिला नगर के शराब विक्रेता महामती की पूत्री थी, उसके द्वारा मूर्ति निर्माण करने का इस अभिलेख में उल्लेखहै। यहाँ से पकी मिट्टी की मुहरें भी प्राप्त हुई है।

वनगाँव से भी प्राचीन पुरातात्त्विक सामग्रीयाँ प्राप्त की गई है। यह सहरसा जिला, बिहार में अवस्थित है। यहाँ से विग्रहपाल तृतीय का एक तामपत्र प्राप्त हुआ है। इसकी खोज डी० सी० सरकार ने की। यह विग्रहपाल के शासन के 24 वें वर्ष में अंकित करवाया था। इसकी कुछ पंक्तियों में पाल शासक गोपाल के विषय में अंकित है। यह एक भूमिदान पत्र है। यह भूमिदान इटहका गाँव के धनवक श्रवण ब्राम्हण को दिया गया है। यह मूलतः कोलचा का रहने वाला था।

मिथिला के प्रसिद्ध गाँव पंचोभ दरभंगा जिला से पश्चिम–दक्षिण में स्थित है। यहाँ से खेत की जुलाई के समय किसी किसान को ताँबे का एक प्लेट प्राप्त हुआ था। इस प्लेट पर संस्कृत में 30 पंक्तियों में लेख अंकित है। इसका पाठ मैथिली में है। इसका महत्त्व इस संदर्भ में है कि यह लेखअशत शासक वंशों से परिचित कराता है। यह एक दानपत्र है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि जयपुर नामक एक नगर था जिसके राजा का नाम परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर तथा महामांडलिक संग्राम गुप्त था जो महेश्वर के भक्त थे।

इस इन अभिलेखों के अतिरिक्त कटरा से प्राप्त अभिलेख, भीठ – भगवानपुर अभिलेख, अंधराठाढ़ी अभिलेख, कन्दाहा अभिलेख, विस्फी ताम्रपत्र अभिलेख, खोजपुर दुर्गा प्रतिमा अभिलेख, इमादपुर विष्णु एवं गणेश प्रतिमा, भागीरथपुर अभिलेख, बराँटपुर–चण्डीस्थान अभिलेख आदि ऐसे क्षेत्रीय अभिलेख है जिससे पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त नालन्दा से प्राप्त अनेक ताम्रपत्र तथा मुहरों से भी शासक तथा राज्य के विषय में स्पष्ट होता है। अपस्द् अभिलेख इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ सूची

1. चटर्जी, गौरीशंकर – हर्षवर्धन, इलाहाबाद, 1938
2. मुखर्जी, आर. के. – हर्ष, ऑक्सफोर्ड, 1926
3. मजूमदार, आर. सी. – दि क्लासिकल एज, बम्बई, 1954
4. शर्मा, वैधनाथ – हर्ष एण्ड हिज टाइम्स, वाराणसी, 1970
5. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, इलाहाबाद, 2007
6. उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्र ऑफ मिथिला, पृ. 221–222
7. जी. डी. कॉलेज बुलेटिन नं० – 2, इन्स क्रिप्सन ऑफ बिहार
8. डी० सी. सरकार, द इविग्राफी इंडिका, भाग पृ. 86
9. शर्मा राम प्रकाश, मिथिला का इतिहास, दरभंगा, 1979, पृ. 182